सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ-श-रए मुबश्शरह के नवें सहाबी की सीरते तय्यिबा बनाम

رضی اللہ تعالیٰ عنہ

फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद

Faizane Saeed Bin Zaid (Hindi)

- इस्तिक़ामत का पहाड़
- हक़ीक़ी सआदत व ख़ुश बख़्ती
- जन्नती होने की बिशारत
- मक़ामे सहाबी ब ज़बाने सहाबी
- हुक्मरानी के बा वुजूद तक़्वा बर क़रार
- ए 'लाए कलि-मतुल हक़ का अज़ीम जज़्बा
- आ 'ला फ़हमो फ़िरासत
- शहादत है मत़्लूबो मक़्सूदे मोमिन

المدینۃ العلمیۃ (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ

येह रिसाला (**फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद** رضی اللہ تعالٰی عنہ)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मग़्फ़िरतों भरा इज्तिमाअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ सय्याह़ (या'नी सैर करने वाले) फ़िरिश्ते हैं जो मह़ाफ़िले ज़िक्र की तलाश में रहते हैं, जब वोह मह़ाफ़िले ज़िक्र के पास से गुज़रते हैं तो एक दूसरे से कहते हैं : (यहां) बैठो। जब ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वाले) दुआ़ मांगते हैं तो फ़िरिश्ते उन की दुआ़ पर आमीन (या'नी ऐसा ही हो) कहते हैं। जब वोह नबी पर दुरूद भेजते हैं तो वोह फ़िरिश्ते भी उन के साथ मिल कर दुरूद भेजते हैं ह़त्ता कि वोह मुन्तशिर (या'नी इधर उधर) हो जाते हैं, फिर फ़िरिश्ते एक दूसरे को कहते हैं कि : ''इन ख़ुश नसीबों के लिये ख़ुश ख़बरी है कि येह मग़्फ़िरत के साथ वापस जा रहे हैं।'' (جمع الجوامع، الحدیث: ۷۷۵۰، ج۳، ص۱۲۵)

www.dawateislami.net

वोह सलामत रहा क़ियामत में
पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर
मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर
भेज ऐ मेरे किर्दिगार सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्तिक़ामत का पहाड़

अ़रब के मश्हूर शह्र "**मक्कतुल मुकर्रमा**" के किसी मह़ल्ले में एक मकान के अन्दर से क़ुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ आ रही थी, लेकिन येह आवाज़ एक शख़्स की नहीं थी, ऐसा लग रहा था कि जैसे एक आदमी दो अफ़राद को क़ुरआने पाक सिखा रहा है, इस की ता'लीम दे रहा है, गोया इन में एक उस्ताद है और बक़िय्या दोनों उस के शागिर्द। येह एक दिन की बात नहीं थी बल्कि कई दिनों से येह अ़मल जारी व सारी था, तीनों क़ुरआने पाक की तिलावत में बे ख़ौफ़ो ख़त़र मुन्हमिक थे, उन्हें इस बात का अन्दाज़ा नहीं था कि थोड़ी देर बा'द इन पर इम्तिह़ान की घड़ी आने वाली है। येह तीनों ह़ज़रात नए नए मुसल्मान हुए थे, इन के रिश्तेदारों में भी अभी तक कई लोग इस्लाम की दौलत से मह़रूम

www.dawateislami.net

थे, इसी वज्ह से येह ह़ज़रात उन के फ़ितनों से छुप कर क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल कर रहे थे, क़ुरआने पाक की तिलावत के बा'द उसे मख़्सूस जगह पर छुपा देते ताकि दीगर लोगों की इस पर नज़र न पड़े।

दूसरी त़रफ़ कुफ़्फ़ार इस बात पर बड़े हैरान व परेशान थे कि इस्लाम निहायत तेज़ी से फैल रहा है अगर आज हम ने इस को रोकने की कोशिश न की तो येह हमारे घरों में भी दाख़िल हो जाएगा और हमारे आबाओ अज्दाद के दीन को ख़त्म कर देगा। इन के सरदार ने कहा कि इस का सिर्फ़ एक ही ह़ल है और वोह येह कि जिस शख़्स ने इस्लाम की इब्तिदा की है उसे ही ख़त्म कर दिया जाए। येह सुन कर तमाम लोग कहने लगे कि इस्लाम को फैलाने वाले (ह़ज़रते सय्यिदुना) **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم) हैं, लेकिन (معاذ اللہ عزوجل) उन्हें शहीद करना आसान नहीं क्यूं कि इन का तअ़ल्लुक़ क़ुरैश से है, और इन की शहादत के बा'द क़ुरैश, बनू हाशिम और बनू ज़हरा क़बाइल के सारे लोग हमारे दुश्मन हो जाएंगे। क़ुरैश के उस सरदार ने कहा : ''जो शख़्स येह काम करेगा मैं उसे एक सो सुर्ख़ और सियाह ऊंटनियां और एक हज़ार ऊक़िय्या चांदी दूंगा जिस का हर ऊक़िय्या चालीस दिरहम का होगा।''

अचानक एक रो'बदार चेहरे वाला शख़्स खड़ा हुवा और

www.dawateislami.net

उस ने कहा : "**येह काम मैं करूंगा ।**" तमाम लोग हैरान हुए लेकिन सब को यक़ीन था कि येह अहम काम येह शख़्स कर सकता है, क्यूं कि ताक़त व बहादुरी और निडर व बेबाक होने में वोह बहुत मश्हूर था ।

चुनान्चे वोह बहादुर शख़्स घर से नंगी तलवार ले कर इस बुरे इरादे से निकल खड़ा हुवा । मक्कए मुकर्रमा की एक गली से गुज़र रहा था कि एक शख़्स से सामना हो गया, उस ने पूछा : "ख़ैरिय्यत है ! नंगी तलवार लिये कहां जा रहे हो ? लगता है तुम्हारा इरादा कुछ ठीक नहीं ।" उस बहादुर शख़्स ने कहा : "हां ! मैं (हज़रते सय्यिदुना) **मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह** (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم) को (معاذ اللہ عزوجل) शहीद करने के इरादे से जा रहा हूं, मैं इस्लाम को जड़ से उखाड़ देना चाहता हूं।" उस शख़्स ने कहा : "पहले अपने घर की भी ख़बर ले लो, तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों इस्लाम क़बूल कर चुके हैं ।"

येह सुनते ही वोह आग बगूला हो गया और रास्ता तब्दील कर के दूसरी गली में दाख़िल हो गया, और उस मुबारक मकान के सामने जा पहुंचा जिस में वोह तीनों क़ुरआने पाक की ता'लीम हासिल करते और तिलावत किया करते थे । उन तीनों में एक उस की बहन और दूसरा बहनोई जब कि तीसरा शख़्स उन को क़ुरआन सिखाने वाला था । उस वक़्त भी मकान के अन्दर से कुछ पढ़ने की

www.dawateislami.net

आवाज़ आ रही थी, उस ने दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से पूछा गया : "कौन ?" उस ने अपना नाम बताया तो मकान में मौजूदा वोह तीनों घबरा गए, बहन और बहनोई के इलावा तीसरा शख़्स डर के मारे किसी कोने में छुप गया, अल ग़रज़ जल्दी में येह लोग कुरआने पाक छुपाना भी भूल गए, बहन ने दरवाज़ा खोला तो उस शख़्स ने अपनी बहन और बहनोई दोनों पर ग़ज़ब नाक होते हुए पूछा : **"ऐ दुश्मने जां ! तुम लोग बे ईमान हो गए हो, अपने आबाओ अज्दाद के दीन को छोड़ कर नया दीन इख़्तियार कर लिया है ?"**

दोनों ने इस्लाम की मह़ब्बत से सरशार जवाब देते हुए कहा : **"ऐ भाई ! हम बे दीन हो गए या कुछ भी हो गए, तुम येह बताओ तुम्हारे दीन में क्या सच्चाई है ? हम तो एक ख़ुदा की इबादत करते हैं जो وَحْدَہٗ لَاشَرِیْک है, हम दीने इस्लाम ही को ह़क़ समझते हैं, और हरगिज़ इसे न छोड़ेंगे ।"**

येह सुनना था कि उसे मज़ीद तै़श आ गया, उस ने कहा : **"मैं तुम्हें हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा ।"** और गुस्से में बहन व बहनोई दोनों को मारना पीटना शुरूअ़ कर दिया और ख़ूब मारा यहां तक कि मार मार कर लहू-लुहान कर दिया। कुरआने पाक की तिलावत करने वाले उन दोनों आ़शिक़ाने कुरआन ने अपनी ज़बान से **उफ़** तक न किया, और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आने वाली इस बड़ी

www.dawateislami.net

आज़्माइश पर सब्र का दामन हाथ से न जाने दिया, बल्कि इस्लाम की महब्बत में "**इस्तिक़ामत का पहाड़**" बन गए, और ज़बाने हाल से गोया इस बात का अह्द किया कि : "**राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इस्लाम पर क़ाइम रहने के लिये अगर अपने जिस्म के हज़ारों टुकड़े भी करवाने पड़े तो ज़रूर करवाएंगे मगर दीने इस्लाम को हरगिज़ न छोड़ेंगे ।**"

जब मार मार कर वोह थक गया और उसे यक़ीन हो गया कि इन पर कोई असर होने वाला नहीं तो एक तख़्त पर बैठ गया । वहां मौजूद **क़ुरआनी सहीफ़ों** को देख कर कहने लगा : "**येह क्या है ?**" बहन ने कहा : "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम "**क़ुरआने मजीद**" है, तुम नापाक हो इसे हाथ नहीं लगा सकते, हां गुस्ल कर लो फिर इसे छू सकोगे ।" उस ने गुस्ल किया और फिर क़ुरआने पाक को हाथों में ले कर खोला तो सूरए "**طٰهٰ**" सामने आ गई, उसे पढ़ने लगा जैसे ही इस की तिलावत की :

﴿إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي﴾

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मैं ही हूं **अल्लाह** कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख । (پ۱۶، طٰهٰ:۱۴) येह पढ़ना था कि पूरे बदन पर एक अजीब सी हैबत तारी हो गई, दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, और बिल आख़िर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर इस्लाम

www.dawateislami.net

क़बूल कर लिया।

(تاریخ الخلفاء، ص ۸۸ ، السیرۃ النبویۃ، اسلام عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۳۱۹، سیرت سید الانبیاء، ص ۱۰۳ مفہوما)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इब्तिदाए इस्लाम में दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की तस्दीक़ करने वालों पर मुश्रिकीने मक्का ने बे पनाह जुल्मो सितम ढाए ह़त्ता कि जो कल तक मुह़ाफ़िज़ थे आज वोही जानी दुश्मन बन गए, और तो और अपने ख़ूनी रिश्तेदारों ने ही जु़ल्मो सितम की इन्तिहा कर दी, मगर मुसल्मानों की इस्तिक़ामत पर कुरबान जाइये, जु़ल्मो सितम सह कर लहू-लुहान हो गए मगर उन के ईमान में फ़र्क़ न आया। जैसा कि मज़्कूरा बाला सह़ाबी और सह़ाबिया का वाक़िआ़ आप ने पढ़ा कि लहू-लुहान होने के बा वुजूद **"इस्तिक़ामत का पहाड़"** बने रहे, बल्कि दीने इस्लाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पर **इस्तिक़ामत का ऐसा अ़ज़ीम मुज़ा-हरा** किया कि उन्हें दीने इस्लाम से फैरने वाला भाई ख़ुद दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया।

इस्तिक़ामत का मुज़ा-हरा करने वाला येह जवान कौन था ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में लहू-लुहान

www.dawateislami.net

होने वाले और दीने इस्लाम पर सब्रो रिज़ा के साथ इस्तिक़ामत का अ़ज़ीम मुज़ा-हरा करने वाले येह जवान जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **सईद बिन ज़ैद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे और तकालीफ़ में उन का साथ देने वाली ख़ा़तून आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इत़ाअ़त शिआ़र ज़ौजा उम्मे जमील ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं और इन को लहू-लुहान करने वाले अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।

सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद का नाम व नसब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ''सईद '' और कुन्यत ''अबुल आ'वर'' है। आप का सिल्सिलए नसब इस त़रह़ है : सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन रियाह़ बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन क़ुरत़ बिन रज़ाह़ बिन अ़दी बिन का'ब बिन लुई क़ु-रशी अ़-दवी । (تاریخ مدینہ دمشق، ج ۲۱، ص ۶۲-۶۶)

सिल्सिलए नसब में हुज़ूर से इत्तिसाल

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिल्सिलए नसब दसवीं पुश्त में का'ब बिन लुई पर जा कर ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नसब से जा मिलता है । (الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۳۷)

www.dawateislami.net

वालिदए मोह्-त-रमा का तआ़रुफ़

आप की वालिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़मा बिन्ते बइ्जा बिन उमय्या बिन खु़वैलद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का तअ़ल्लुक़ क़बीलए बनू ख़ुज़ाआ़ से है और आप इब्तिदाअन इस्लाम लाने वाले खु़श नसीबों में से हैं।

(الاصابة، حرف السين المهملة، سعيد بن زيد، ج ٣، ص ٨٧، تاريخ مدينة دمشق، ج ٢١، ص ٦٦)

वालिदे गिरामी का तआ़रुफ़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्ये नुबुव्वत नाज़िल होने से पहले ही आप दुन्या से तशरीफ़ ले गए थे।

(الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٣٧)

मिल्लते इब्राहीमी के पैरौकार

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद कुफ़्रो शिर्क और ज़मानए जाहिलिय्यत की खु़राफ़ात से बेज़ार थे और कु़रैश पर हमेशा नुक्ता चीनी किया करते थे। आप मुवह़्ह़िद (या'नी **अल्लाह** तआ़ला को एक मानने वाले) और मिल्लते इब्राहीमी के पैरौकार थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से

www.dawateislami.net

कहा : मैं ने अपनी क़ौम की मुख़ा-लफ़त की, मैं ने सय्यिदुना इब्राहीम व इस्माईल عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मज़हब की पैरवी की और उस की जिस की वोह इबादत करते थे, वोह दोनों इस क़िब्ले की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते थे। और मैं बनी इस्माईल में से एक नबी का इन्तिज़ार कर रहा हूं। मेरा गुमान येह है कि मैं उन का ज़माना नहीं पा सकूंगा। मैं उन पर ईमान लाता हूं और उन की तस्दीक़ करता हूं और गवाही देता हूं कि वोह नबी हैं अगर तुम्हारी उम्र दराज़ हो और उन से मुलाक़ात हो तो मेरा सलाम कहना। ह़ज़रते सय्यिदुना आमिर बिन रबीआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं ने इस्लाम क़बूल किया और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सलाम पेश किया तो नबिय्ये अकरम रह़मते दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने उन को जन्नत में देखा कि वोह दामन घसीट रहे हैं।

(الطبقات الکبری، طبقات البدریین من المھاجرین، الطبقۃ الاولی، ج۳، ص۲۹۰)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप **का'बतुल्लाह** शरीफ़ से पीठ लगाए खड़े हैं और इर्शाद फ़रमा रहे हैं : **"ऐ गुरौहे क़ुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! तुम में से मेरे इलावा कोई भी दीने इब्राहीमी पर नहीं।"** आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर होने से बचाते जब कोई अपनी बच्ची को मारने का इरादा करता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस से फ़रमाते : **"इसे क़त्ल न करो मैं इस (की परवरिश) का बार बरदाश्त करूंगा ।"** फिर उसे ले लेते जब बड़ी हो जाती तो उस के बाप से कहते : **"अगर तुम चाहो तो तुम्हें दे दूं और अगर चाहो तो इस (के निकाह़) का बार मैं उठा लूं ।"**

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب حدیث زید بن عمرو، الحدیث: ۳۸۲۸، ج ۲، ص ۵۶۸)

ए'लाए ह़क़ का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़लल ए'लान कुरैश के दीन से बराअत का इज़्हार किया करते थे और इसी वज्ह से आप का चचा ख़त्ताब बिन नुफ़ैल आप को बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ें दिया करता था। यहां तक कि एक दफ़्अ़ इन को मक्कए मुकर्रमा से शह्र बदर कर दिया और फिर दोबारा मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल भी न होने दिया। मगर आप की वह्दानिय्यत पर इस्तिक़ामत के क्या कहने ! हज़ारों ज़ुल्मो सितम और तकालीफ़ से भरपूर पाबन्दियां आप को मु-त-ज़लज़ल न कर सकीं। चुनान्चे आप के दो शे'र बहुत मश्हूर हैं जिन्हें आप मुश्रिकीन के मेलों और मज्मओं में ब आवाज़े बुलन्द सुनाया करते थे।

www.dawateislami.net

اَرَبًّا وَّاحِدًا اَمْ اَلْفَ رَبٍّ

اَدِيْنُ اِذَا تُقُسِّمَتِ الْاُمُوْر

تَرَکْتُ اللّاتَ وَالْعُزّٰی جَمِيْعًا

کَذَالِکَ يَفْعَلُ الرَّجُلُ الْبَصِيْر

या'नी क्या मैं एक रब की इताअ़त करूं या एक हज़ार रब की ? जब कि लोगों के दीनी मुआ-मलात तक़्सीम हो चुके हैं। मैं ने तो लात व उ़ज़्ज़ा सब झूटे ख़ुदाओं को छोड़ दिया है। और यक़ीनन हर बसीरत वाला ऐसा ही करेगा। (السیرۃ النبویۃ، زید بن عمرو بن نفیل، ج ۱، ص ۹۲)

आप अकेले पूरी उम्मत हैं

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल मेरे और ईसा علیہ السّلام के दरमियान एक उम्मत हैं, कल बरोज़े क़ियामत उन्हें एक उम्मत के तौर पर उठाया जाएगा।"

(السنن الکبریٰ، کتاب المناقب، زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث: ۸۱۸۷، ج ۵، ص ۵۴)

इस्लाम की जानिब मैलान का बुन्यादी सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन नेक वालिदैन की औलाद में भी उन के तक़्वे के आसार मौजूद होते हैं, वालिदैन जिन चीज़ों से महब्बत या नफ़रत करते हैं उन की औलाद में भी

www.dawateislami.net

फ़ितूरतन वोही नफ़रत या महब्बत पाई जाती है। यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ के **इस्लाम की जानिब मैलान का बुन्यादी सबब** येही था कि इन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम को राहे ह़क़ की तलाश में सरगर्दां देखा। बाप का नेकी की त़रफ़ रुज्ह़ान बेटे के ह़क़ में मुफ़ीद साबित हुवा और क़बूले इस्लाम का मुहर्रिक बना।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ से क़राबत दारी

अमीरुल मुमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की बहन ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब رضی اللہ تعالٰی عنہا ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में थीं और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ की बहन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہا अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में थीं। (اسد الغابہ، سعید بن زید القرشی، ج ۲، ص ۴۵۶)

आप का हुल्यए मुबा-रका

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ दराज़ क़द और घने बालों वाले थे।

(الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۳۹)

ह़क़ीक़ी सआ़दत व ख़ुश बख़्ती

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन

www.dawateislami.net

ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम इस्लाम लाने से पहले और इस्लाम लाने के बा'द भी "**सईद**" ही रहा, गोया ज़मानए जाहिलिय्यत में सिर्फ़ आप का नाम "**सईद**" था लेकिन जैसे ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी में आए तो ह़क़ीक़ी सईद या'नी खुश बख़्त बन गए नीज़ सआ़दतों और खुश बख़्तियों की आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर छमाछम बारिश होने लगी और क्यूं न हो कि

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया

जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

मुब्तदी मुसल्मान

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़दीमुल इस्लाम हैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दारे अरक़म में दाख़िल होने से क़ब्ल ही इस्लाम ला चुके थे। (الاصابة، حرف السين المهملة، سعيد بن زيد، ج ٣، ص ٨٧)

मुहाजिरे अव्वल

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीने अव्वलीन में से हैं।

(تاریخ مدینه دمشق، ج ٢١، ص ٦٥)

या'नी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने अव्वलन हिजरते मदीना की सआ़दत ह़ासिल की। पारह 11, **सू-रतुत्तौबह,** आयत 100 में मुहाजिरीने अव्वलीन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ और जन्नत का खुसूसी मुज़्दा सुनाया गया है। चुनान्चे **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍۙ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ۝۱۰۰

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरव हुए **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा इन में रहें येही बड़ी काम्याबी है।

रिश्तए मुवाख़ात

मदीनए मुनव्वरह में हिजरत के बा'द **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ और हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़रक़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ के माबैन रिश्तए मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाया। (الطبقات الکبری، ج۳، ص۲۹۲)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़बूले इस्लाम

आप और आप की ज़ौजा رضی اللہ تعالٰی عنہما के सबब अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए जिन की ज़ाते गिरामी से इस्लाम को ऐसा अ़ज़ीम फ़ाएदा हुवा कि तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती।

(تہذیب الاسماء واللغات، باب سعید بن زید، ج۱، ص۲۱۱)

www.dawateislami.net

आप की ख़ुश बख़्ती

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا निहायत ही परहेज़ गार और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़रमां बरदार थीं, नीज़ राहे ख़ुदा में इस्लाम की ख़ातिर आने वाली मुसीबतों में इन्हों ने आप का बहुत साथ दिया और यक़ीनन नेक व फ़रमां बरदार ज़ौजा का होना भी सआदत मन्दी है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें इब्ने आदम की ख़ुश बख़्ती से हैं और तीन चीज़ें इब्ने आदम की बद बख़्ती से हैं।" इब्ने आदम की ख़ुश बख़्ती वाली तीन चीज़ें येह हैं : (1) इताअ़त गुज़ार नेक बीवी (2) अच्छी रिहाइश गाह (3) और अच्छी सुवारी। और बद बख़्ती वाली तीन चीज़ें येह हैं : (1) बद अख़्लाक़ ना फ़रमान बीवी (2) बुरी रिहाइश गाह और (3) बुरी सुवारी।

(مسند امام احمد، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۱۴۴۵، ج ۱، ص ۳۵۷)

बैअ़ते रिज़वान का शरफ़

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैअ़ते रिज़वान में भी शिर्कत की। इस बैअ़त में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर एक दरख़्त के नीचे अपने हाथ रख कर बैअ़ते जिहाद की थी और

www.dawateislami.net

कुरआने मजीद पारह 26, **सू-रतुल फ़त्ह़,** आयत 10 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस मुबारक बैअ़त को अपनी बैअ़त फ़रमाया। चुनान्चे इर्शाद होता है : ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَؕ﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं वोह तो **अल्लाह** ही से बैअ़त करते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जहन्नम से आज़ादी की बिशारत

अह़ादीसे मुबा-रका में "**बैअ़ते रिज़्वान**" में शामिल होने वाले तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये जहन्नम से आज़ादी की बिशारत मौजूद है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिन्हों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की उन में से कोई भी जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل من بایع تحت الشجرۃ، الحدیث: ۳۸۸۶، ج۵، ص۴۶۲)

जन्नती होने की बिशारत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़-श-रए मुबश्शरह में से हैं। या'नी जिन दस सह़ाबए किराम को साक़िये कौसर, मालिके जन्नत ने दुन्या ही में जन्नती होने की बिशारते उ़ज़्मा से नवाज़ा उन में से एक आप भी हैं। चुनान्चे "**तिरमिज़ी शरीफ़**" में है कि एक मर्तबा

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सहाबए किराम علیہم الرضوان के जम्मे ग़फ़ीर में यूं ह़दीसे पाक बयान की, कि मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "दस अफ़राद जन्नती हैं, अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान, अ़ली, ज़ुबैर, त़ल्ह़ा, अ़ब्दुर्रह़मान, अबू उ़बैदा, सा'द बिन अबी वक़्क़ास येह सब जन्नती हैं।" رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین

इन नव सहाबए किराम علیہم الرضوان के अस्मा ज़िक्र करने के बा'द आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ख़ामोश हो गए, लोगों ने अ़र्ज़ किया : "येह तो नव हैं, हम आप को **अल्लाह** عزوجل की क़सम देते हैं आप बताएं कि दसवें कौन हैं ?" आप ने फ़रमाया : "तुम ने मुझे **अल्लाह** عزوجل की क़सम दी है तो बता देता हूं। अबुल आ'वर जन्नती हैं। (अबुल आ'वर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ की कुन्यत है)

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۹، ج۵، ص۴۱۶)

आप के रफ़ीक़े जन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, एक मर्तबा **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क्या मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी न दूं ?" अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं **या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ! फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"तुम्हारे वालिद या'नी अबू बक्र जन्नती हैं और जन्नत में उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इब्राहीम علیہ السلام होंगे, उ़मर जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते नूह़ علیہ السلام होंगे, उ़स्मान जन्नती हैं उन का रफ़ीक़ मैं ख़ुद हूं, अ़ली जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते यह़्या बिन ज़-करिय्या علیہ السلام होंगे, त़ल्ह़ा जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते दावूद علیہ السلام होंगे, ज़ुबैर जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इस्माई़ल علیہ السلام होंगे, सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद علیہ السلام होंगे, **सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते मूसा बिन इमरान علیہ السلام होंगे,** अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते ई़सा बिन मरयम علیہ السلام होंगे, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इदरीस علیہ السلام होंगे।" फिर फ़रमाया : "ऐ आ़इशा मैं मुर-सलीन का सरदार हूं और तुम्हारे वालिद अफ़्ज़लुस्सिद्दीक़ीन (या'नी सिद्दीक़ीन में सब से अफ़्ज़ल) हैं और तुम उम्मुल मुअमिनीन (या'नी तमाम मोमिनों की मां) हों।"

(الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۵)

आप की गुस्ताख़ी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि एक औ़रत जिस का नाम "अरवा बिन्ते उवैस" था उस ने ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन ह़कम के दरबार में ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़िलाफ़ येह दा'वा दाइर किया कि

www.dawateislami.net

इन्हों ने मेरी ज़मीन पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा कर लिया है। मरवान ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से जवाब त़लब किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क्या मैं सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीस सुनने के बा'द भी इस की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करूंगा। मरवान ने कहा : आप ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या सुना है ? आप ने फ़रमाया : मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि ''जो शख़्स किसी की एक बालिश्त ज़मीन पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा करेगा, क़ियामत के दिन उस को सातों ज़मीनों का त़ौक़ पहनाया जाएगा।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जवाब सुन कर मरवान ने कहा : अब मैं आप से कोई गवाह त़लब नहीं करूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़ैसला सुन कर कुछ इस त़रह़ दुआ़ मांगी : ''**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह औ़रत झूटी है तो तू इसे अन्धा कर दे और जिस ज़मीन के बारे में इस ने दा'वा किया है उसी ज़मीन पर इसे मौत दे दे।'' चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने उस औ़रत को देखा तो वोह अन्धी हो गई थी और दीवारें पकड़ पकड़ कर इधर उधर चलती फिरती थी यहां तक कि वोह एक दिन उसी ज़मीन के एक कूंएं में गिर कर मर गई।

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، تحریم الظلم وغصب الارض، الحدیث: ۱۶۱۰، ص ۸۷۰)

www.dawateislami.net

अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दों से महब्बत या नफ़रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों से मह़ब्बत करना बाइ़से रह़मत व ब-र-कत है इसी त़रह़ इन से दुश्मनी करना या इन के ख़िलाफ़ किसी भी क़िस्म की महा़ज़ आराई करना दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लत व ख़सारे का बाइ़स है । बल्कि **औलियाउल्लाह** से दुश्मनी करने वाले के ख़िलाफ़ तो ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ का ए'लाने जंग है । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए गुयूब मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की, उसे मेरा ए'लाने जंग है।" (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ۶۵۰۲، ج۴، ص۲۴۸)

मक़ामे सह़ाबी ब ज़बाने सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जो किसी ग़ज़्वे में शरीक हुवा और उस के चेहरे पर गर्द लग गई तो येह इस से अफ़्ज़ल है कि तुम में से किसी को ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जितनी उ़म्र (या'नी साढ़े नव सो साल) दी जाए और वोह नेक आ'माल करता

www.dawateislami.net

रहे ।'' (مسندامام احمد، مسند سعید بن زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث: ۱۶۲۹، ج ۱، ص ۳۹۷)

आप की दुन्या से बे रग़बती और मैलाने आख़िरत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब येह पैग़ाम भेजा कि : ''मुझे ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बताएं कि वोह कैसे आदमी हैं ? ह़ज़रते यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान और ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़ैरिय्यत और मुसल्मानों के साथ उन के रवय्ये और ख़ैर ख़्वाही से भी बा ख़बर कीजिये ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जवाबन येह पैग़ाम भेजा कि ''ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बेहतरीन इन्सान हैं, मुसल्मानों के ज़बर दस्त ख़ैर ख़्वाह और इन के दुश्मन पर बे पनाह शिद्दत फ़रमाते हैं । जब कि ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़ैर ख़्वाही भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पसन्द के मुत़ाबिक़ है ।'' फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद और सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की कारकर्दगी दरयाफ़्त की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह भी बेहतर हैं, बस इतना है

www.dawateislami.net

कि सरदारी ने इन दोनों की दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की जानिब मैलान में बे पनाह इज़ाफ़ा कर दिया है।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج٦٥، ص٦٨)

हुक्मरानी के बा वुजूद तक़्वा बर क़रार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे अस्लाफ़ رحمہم اللہ تعالٰی का ज़ोहदो तक़्वा कैसा बे मिसाल हुवा करता था, न तो इन्हें मन्सब के हुसूल की ख़्वाहिश होती और न ही मालो दौलत की हवस, अगर कोई अहम ओ़हदा क़बूल करने की नौबत आ भी जाती तो येह ह़ज़रात उसे अ़तिय्यए ख़ुदावन्दी समझा करते, हुक्मरानी के बा वुजूद इन का तक़्वा बर क़रार रहता, नीज़ वोह हुक्मरानी या ज़िम्मेदारी इन की इबादात व रियाज़ात में इज़ाफ़े का बाइ़स बनती। **मगर अफ़्सोस !** आज हमारा ह़ाल येह है कि हमें कोई ओ़हदा मिल जाए तो हमारी चाल ही तब्दील हो जाती है, पहले तो अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों से निहायत ही ख़ुश अख़्लाक़ी से गुफ़्त-गू करते हैं लेकिन जैसे ही कोई ओ़हदा मिला गुरूरो तकब्बुर, ह़सद, कीना, ज़ुल्म या इन जैसे दीगर कई गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं। **ऐ काश !** हम भी अपने अस्लाफ़ की सीरत पर अ़मल करने वाले बन जाएं और कोई ओ़हदा मिले या न मिले हमारे तक़्वे में किसी भी त़रह़ कमी न आए।

www.dawateislami.net

सईद बिन ज़ैद, हाकिमे दिमश्क़

वाज़ेह रहे कि अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ को दिमश्क़ का ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाया था ।

(تاریخ مدینہ دمشق، ج ۲۱، ص ۲۲)

ए'लाए कलि-मतुल ह़क़ का अ़ज़ीम जज़्बा

जब ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन ह़कम को शामी क़ासिद के हाथों एक मक्तूब रवाना किया गया जिस में लोगों को यज़ीद की बैअ़त करने का हुक्म दिया गया था तो ह़ाकिमे मदीना ने फ़ौरन इस पर अ़मल न किया, चुनान्चे शामी क़ासिद ने हुक्म के निफ़ाज़ में ताख़ीर होती देख कर बे साख़्ता कहा : "ऐ मरवान ! बैअ़त का हुक्म नाफ़िज़ करने में क्या चीज़ आड़े आ रही है ?" मरवान ने कहा : "जब तक ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ आ कर बैअ़त नहीं कर लेते मैं कुछ नहीं कर सकता क्यूं कि शह्र वाले उन्हें अपना सरदार मानते हैं, जब वोह यज़ीद की बैअ़त कर लेंगे तो लोग बा आसानी बैअ़त पर राज़ी हो जाएंगे ।" शामी क़ासिद ने मरवान से कहा : "क्यूं न मैं उन को यहां ले आऊं ।" चुनान्चे उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ के घर आ कर कहा : "आप मेरे साथ बैअ़त करने चलें ।" आप ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम जाओ ! मैं बा'द में आ जाऊंगा ।" उस ने

www.dawateislami.net

कहा : "चलिये वरना मैं आप की गरदन उड़ा दूंगा ?" आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने उस की धमकी की क़त्अ़न परवाह न की और ए'लाए कलिमए ह़क़ का अ़ज़ीम मुज़ा–हरा करते हुए यूं इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम मेरी गरदन उड़ाओगे ? ख़ुदा की क़सम ! तुम मुझे ऐसी ज़ालिम क़ौम की बैअ़त की त़रफ़ बुला रहे हो जिन से मैं माज़ी में जिहाद कर चुका हूं।" आप की ह़क़्क़ो सदाक़त से भरपूर येह आवाज़ सुन कर वोह मुंह बनाए मरवान के पास पहुंचा और उसे सारा माजरा कह सुनाया। येह सुन कर मरवान ने उसे ख़ामोश रहने का कहा। (الرياض النضرة، ج ٢، ص ٣٤٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ का किरदार किस क़दर क़ाबिले रश्क हुवा करता था, आईनए बात़िल के सामने ह़क़्क़ो सदाक़त की मुंह बोलती तस्वीर बन जाया करते थे, क्यूं कि उन्हें किसी दुन्यवी ह़ाकिम का क़त्अ़न ख़ौफ़ न होता था, उन का दिल तो सिर्फ़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का गिरवीदा था, उन पर ज़ुल्म किया जाता तो त़ाक़तो क़ुदरत के बा वुजूद जवाबन ज़ुल्म न करते, कड़वी कसैली बातों का जवाब मीठे और मुअस्सिर अन्दाज़ में दिया करते, उन की ज़बान से त़न्ज़ और त़ा'नो तश्नीअ़ के तीरों के बजाए इ़ल्मो ह़िक्मत के म–दनी फूल बरसा करते, इसी इख़्लास की ब–र–कत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की ज़बान में वोह हैबत रखी थी कि नर्मो नाज़ुक लहजा होने के बा वुजूद भी मुख़ात़ब थरथर कांपने लग जाता।

www.dawateislami.net

आप का शौक़े जिहाद

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शौक़े जिहाद के क्या कहने ! आप बद्र के इ़लावा तमाम ग़ज़्वात म-सलन : ग़ज़्वए उहुद, ग़ज़्वए ख़न्दक़, ख़ैबर, हुनैन, त़ाइफ़ और ग़ज़्वए तबूक वग़ैरा में शरीक हुए ।

(الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۴۱)

बद्री सह़ाबी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के "**बद्री सह़ाबी**" होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि बुख़ारी शरीफ़ में ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को "**बद्री**" फ़रमाया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर्चे "**ग़ज़्वए बद्र**" में शरीक न हो सके फिर भी आप का शुमार "**बद्री सह़ाबी**" में होता है इस की दो वुजूहात हैं :

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को शाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजा था जब येह दोनों वहां से मदीनए मुनव्वरह वापस लौटे तो "**ग़ज़्वए बद्र**" वाक़ेअ़ हो चुका था । (चूंकि जंगी जासूसी भी जंग ही में शिर्कत है इसी लिये इन दोनों सह़ाबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को "बद्री" फ़रमाया गया है)

(الریاض النضرۃ، ج ۲، ص ۳۴۱)

(2) सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इन्हें माले ग़नीमत में से इन का ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाया, और येह इस बात की दलील है कि वोह बद्री हैं अगर वोह बद्री न होते तो उन्हें उन का ह़िस्सा न दिया जाता। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم के ग़ज़्वए बद्र से लौटने के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالیٰ عنہ मुल्के शाम से वापस आए तो **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم ने उन्हें माले ग़नीमत में से उन का ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाया तो आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने इस्तिफ़्सार किया : " **या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم ! मेरा अज्र ?" इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे लिये तुम्हारा अज्र है।"

(معرفۃ الصحابۃ ،معرفۃ سعید بن زید بن عمرو بن نفیل، ج ۱ ،ص ۱۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शाम की फ़ुतूह़ात में आप का किरदार

अमीनुल उम्मत का मक्तूब

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त में मुसल्मानों का लश्कर मुख़्तलिफ़ अ़लाक़े फ़त्ह़ करता हुवा जब "बअ़-लबक्क" पहुंचा तो अमीरे लश्कर अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने एक मक्तूब के ज़रीए़ बअ़-लबक्क के ह़ाकिम

www.dawateislami.net

हरबीस को पैग़ाम दिया कि इस्लाम ले आओ या फिर जिज़्या दे कर अमान ह़ासिल कर लो। तुम्हारे पास येही दो सूरतें हैं वरना तीसरी सूरत सिर्फ़ जंग है। क़ासिद ने येह मक्तूब ह़ाकिम हरबीस को दिया। हरबीस ने जंगी माहिरीन और रूमी फ़ौज के कमान्डरों से मश्वरे के बा'द क़ासिद को जंग का पैग़ाम दे दिया। बहर ह़ाल पहले मा'रिके में दोनों त़रफ़ से काफ़ी जानी नुक़्सान हुवा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने **ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद** رضی اللہ تعالٰی عنہ को बुलाया और उन्हें पांच सो घुड़-सुवार और तीन सो प्यादा लश्कर अ़त़ा फ़रमाया और रूमियों को क़ल्ए़ के दरवाज़े पर ही क़त्ल करने और मुसल्मानों से ग़ाफ़िल रखने का हुक्म दिया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन अज़्वर رضی اللہ تعالٰی عنہ को पांच सो घुड़-सुवार और सो प्यादा लश्कर दे कर बाबे शाम की त़रफ़ से जुरअत व बहादुरी के साथ लड़ने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया। जब सुब्ह़ हुई तो हरबीस ने अपने लश्कर की सफ़ बन्दी कर के बाबे वस्त़ से ज़ोरदार ह़म्ला करने का हुक्म दिया चुनान्चे बाबे वस्त़ खुलते ही रूमी सिपाही सैलाब की मानिन्द उमन्ड आए और इस्लामी लश्कर पर टूट पड़े। लड़ते लड़ते दोनों लश्कर कुछ ही देर में एक दूसरे के मुक़ाबिल आ गए।

मुसल्मानों की जंगी ह़िक्मते अ़-मली

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ और ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ज़रार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म के मुत़ाबिक़ अपने दस्तों के साथ क़ल्ए़ के बन्द दरवाज़ों का मुह़ा-सरा किये हुए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सह्‌ल बिन सबाह़ अ़बसी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उन्हें रूमियों के ज़ोरदार ह़म्ले की इत्तिलाअ़ देने की ख़ात़िर आग जला दी। जैसे ही उन दोनों लश्करों ने आग का धुवां देखा तो फ़ौरन समझ गए कि इस्लामी लश्कर को हमारी ज़रूरत है। लिहाज़ा दोनों दस्ते तेज़ी के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस्ते से आ मिला। रूमी उस वक़्त क़ल्ए़ की दीवार से कुछ दूर लड़ रहे थे लिहाज़ा दोनों जानिब से मुसल्मानों के नर्ग़े में आ गए। रूमियों को जब अपनी नाकामी का यक़ीन हो गया तो उन के क़दम मैदाने जंग से उखड़ गए और राहे फ़िरार इख़्तियार करते हुए ह़ाकिम हरबीस समेत भाग खड़े हुए।

पहाड़ का मुह़ा-सरा

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पांच सो घुड़-सुवार के साथ हरबीस और उस के लश्कर का तआ़क़ुब करने लगे। रूमियों को ग़ार में पनाह लेते हुए देख कर इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस गुरौह की हलाकत का इरादा फ़रमाया है, इन का हर जगह से मुह़ा-सरा करो, और अगर इन में से कोई आंख उठा कर देखे तो उस को हरगिज़ न छोड़ो।" रूमी

www.dawateislami.net

ग़ार में मह़सूर हो गए और येह सिल्सिला चन्द दिनों तक जारी रहा, एक दिन अचानक रूमियों ने मुह़ा-सरा तोड़ने के लिये ज़बर-दस्त ह़म्ला कर दिया। ह़म्ला इस क़दर शदीद था कि इस्लामी लश्कर आज़्माइश में आ गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन अज़्वर رضی اللہ تعالٰی عنہ इत्तिलाअ़ मिलने पर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ और उन के साथियों की मदद के लिये फ़ौरन पहाड़ की चोटी पर पहुंचे तो वहां बड़ा नाज़ुक मर्ह़ला दरपेश था। इस्लामी लश्कर को रूमियों ने चारों त़रफ़ से घेर रखा था और लगभग सत्तर अफ़्राद को शहीद व ज़ख़्मी कर दिया था। जब मुजाहिदीन को मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद लश्कर की सूरत में हमारे पास आ पहुंची है तो तमाम मुजाहिदीन पूरी कुव्वत से मिल कर रूमियों पर टूट पड़े और उन के लश्कर को तहो बाला कर दिया, शमशीर ज़नी और तीर अन्दाज़ी के वोह जौहर दिखाए कि रूमियों की कसीर ता'दाद को ख़ाको ख़ून में मिला दिया। ह़ाकिम हरबीस अपने साथियों के हमराह वापस ग़ार में घुस गया। भागते हुए रूमियों पर मुजाहिदीन ने यलग़ार की तो और भी बहुत से रूमी मुसल्मानों की ज़र्बों से कट कट कर ज़मीन पर गिरने लगे, एक बार फिर रूमी लश्कर इस्लामी लश्कर के ह़िसार में आ गया। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन के गिर्द सख़्त पहरा बिठा दिया,

www.dawateislami.net

कोई भी रूमी काफ़िर ग़ार से सर निकालता तो मुजाहिदीन उस पर फ़ौरन तीर चला देते, और वोह ज़ख़्मी हो कर वासिले जहन्नम हो जाता। (فتوح الشام، الجزء:۱، ص۱۲۴ تا ۱۲۵)

सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद की आ'ला फ़ह्मो फ़िरासत

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मह्सूरीन की सख़्त निगरानी के लिये कुछ मुजाहिदीन को हुक्म दिया कि वोह लकड़ियां जम्अ़ करें और ह़िसार के गिर्द आग जलाएं ताकि ह़िसार पर मौजूद मुजाहिदीन सख़्त सर्दी से मह़फ़ूज़ रहें और ग़ार में मौजूद कोई रूमी अंधेरे का फ़ाएदा उठाते हुए राहे फ़िरार इख़्तियार न कर सके। और फिर रात भर मुजाहिदीन के हमराह ह़िसार के गिर्द तक्बीरो तह्लील की सदाएं बुलन्द करते हुए घूमते रहे। ग़ार में छुपे रूमियों की ह़ालत बहुत ख़राब थी। भूक, प्यास से उन का बुरा ह़ाल था सख़्त सर्दी से उन के जिस्म शल हो गए थे, बड़ी मुश्किल से रात बसर हुई।

ग़ैरुल्लाह को सज्दा करने से मन्अ़ कर दिया गया

रूमी ज़िल्लतो ख़्वाही और मशक़्क़त की ह़ालत में ग़ार में मह्सूर थे। जब रूमियों को यक़ीन हो गया कि इसी त़रह़ रहे तो हम

www.dawateislami.net

भूक व प्यास और सर्दी से हलाक हो जाएंगे तो ह़ाकिम हरबीस ने अपने मुशीरों से मश्वरा किया कि अब इन अ़-रबों से सुल्ह़ करने में ही आ़फ़िय्यत है। तमाम ने इस राय से इत्तिफ़ाक़ किया चुनान्चे ह़ाकिम हरबीस ने अपने क़ासिद के ज़रीए सुल्ह़ का पैग़ाम भिजवाया। जब क़ासिद आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो उस ने अपने दस्तूर के मुत़ाबिक़ आप को सज्दा करना चाहा लेकिन उसे सख़्ती से मन्अ़ कर दिया गया। उस क़ासिद ने इन्तिहाई तअ़ज्जुब से पूछा : आप अपने अमीर की ता'ज़ीम से मुझे क्यूं रोकते हैं ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं और हमारी शरीअ़त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को सज्दा हरगिज़ रवा नहीं।" क़ासिद ने जब येह सुना तो बे साख़्ता पुकार उठा : येही तो तुम्हारी वोह बुन्यादी ख़ूबी है जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें नसरानियों और दीगर अक़्वाम पर ग़-लबा अ़त़ा फ़रमाता है।

सज्दए शुक्र की अदाएगी

ह़ाकिम हरबीस अपना क़ीमती लिबास उतार कर बकरियों और भेड़ियों के ऊन से बुना हुवा लिबास पहने इन्तिहाई ख़ाइबो ख़ासिर और ज़लीलो रुस्वा हो कर आप की बारगाह में पहुंचा।

www.dawateislami.net

आप ने जब उस की ज़िल्लतो रुस्वाई को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो फ़ौरन बारगाहे इलाही में सज्दा रैज़ हो गए और यूं अ़र्ज़ करने लगे : "इलाही ! तेरा शुक्र है कि तू ने ऐसी जाबिर व मु-तकब्बिर क़ौम को हमारे हाथों सरनिगूं किया।" फिर ह़ाकिम हरबीस की जानिब मु-तवज्जेह हुए तो वोह कहने लगा : "ऐ मुसल्मानों के सालार ! क्या सुल्ह़ की कोई सूरत निकल सकती है ?" आप ने फ़रमाया : "सुल्ह़ करने का इख़्तियार सिर्फ़ हमारे सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को है। अगर सुल्ह़ करनी है तो इन की ख़िदमत में जाना पड़ेगा।" चुनान्चे वोह आप के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और माल व जिज़्या देने की शर्त़ पर सुल्ह़ कर ली। (فتوح الشام، جبله يحارب خالدا، الجزء: ١، ص١٢٥ تا ١٢٧)

सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद को फ़त्ह़ की मुबारक बाद

ह़ाकिम हरबीस को बअ़-लबक्क की ह़ाकिमिय्यत से मह़रूमी का बड़ा सदमा था चुनान्चे अमान मिलने के बा'द कुछ अ़र्सा तो बअ़-लबक्क में रहा लेकिन कुछ बाहमी इख़्तिलाफ़ात और कुछ मुसल्मानों से बदला लेने के जज़्बे ने उसे मुसल्मानों के ख़िलाफ़ ए'लाने बग़ावत पर मजबूर कर दिया बहर ह़ाल दोनों

www.dawateislami.net

फ़ौजों के दरमियान ज़बर दस्त मा'रिका हुवा, नुस्रते ख़ुदावन्दी ने यहां भी मुसल्मानों का साथ दिया जिस के नतीजे में ह़ाकिम हरबीस अपने हज़ारों साथियों समेत वासिले जहन्नम हुवा। और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की मुबारक बाद दी। चुनान्चे जंगे ह़िम्स में अ़ज़ीम फ़त्ह़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : आप को मुबारक हो। लेकिन एक मुअ़म्मा ह़ल नहीं हो रहा कि हरबीस बादशाह जो रूमियों में इन्तिहाई त़ाक़त वर, माहिर जंग-जू और हाथी नुमा था, आख़िर वोह किस के हाथों मौत के घाट उतरा ? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : ऐ सिपह सालार ! येह कारनामा मैं ने अन्जाम दिया है। फ़रमाया : ऐ सईद ! आप ने कैसे उस हाथी पर क़ाबू पा लिया ? तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया "जंग के दौरान मैं ने देखा कि रूमी फ़ौज के दरमियान एक सुवार है जो अपने जिस्म के डील डोल और सुर्ख़ी माइल रंग के सबब सब से नुमायां था। उस की तलवार और ज़िरह भी सब से ज़ियादा क़ीमती थी। मैं उस लम्बे चोड़े रूमी बादशाह पर झपट पड़ा। लेकिन साथ ही मैं ने दिल ही दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपनी त़ाक़त के मुक़ाबले में तेरी त़ाक़त और अपने ग़-लबे के

www.dawateislami.net

मुक़ाबले में तेरे ग़-लबे को तरजीह़ देता हूं लिहाज़ा इस रूमी की मौत मेरे हाथों मुक़द्दर फ़रमा और इस पर मुझे अज्र अ़ता फ़रमा।" फ़रमाया : ऐ सईद ! क्या तुम ने उस के हथियार उतार लिये थे ? तो आप ने अ़र्ज़ किया : नहीं लेकिन मैं ने ही उसे क़त्ल किया है क्यूं कि मेरे नेज़े की नोक उस के दिल में अभी तक पैवस्त है जिसे मैं ने इब्तिदा में उस के दिल में मारा तो वोह अन्दर ही रह गई और वोह ज़मीन पर गिर पड़ा, मैं ने फ़ौरन उस के ऊपर जस्त लगाई और अपनी तलवार से उस का काम तमाम कर दिया।

(فتوح الشام، معرکۃ حمص، الجزء:۱، ص۱۴۷)

शहादत है मत़लूबो मक़्सूदे मोमिन

मक़ामे नज्दा में ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के चन्द साथी मौजूद थे। बीस हज़ार की रूमी फ़ौज चारों जानिब से मुठ्ठी भर मुसल्मानों का मुह़ा-सरा करने के लिये बिल्कुल तय्यार थी। मुसल्मानों के सिपह सालार ह़ज़रते मैसरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ालात की नज़ाकत को भांपते हुए सलातुल ख़ौफ़ पढ़ाई और फिर ह़म्दो सलात के बा'द फ़रमाया ! ऐ मुसल्मानो ! अपनी जगह पर साबित क़दम रहो, अ़न्क़रीब हमें बड़ी बड़ी मुसीबतें आने वाली हैं क्यूं कि दुश्मनों की फ़ौज चार जानिब से हमें घेरने की तय्यारी कर रही है जब कि मुसल्मानों का लश्कर हम से सात दिन

www.dawateislami.net

की मसाफ़त पर है। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर फ़रमाया : ऐ मैसरह ! अगर इस ख़िताब फ़रमाने से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़्सूद येह है कि हमारे ह़ौसले पस्त न हों तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बे फ़िक्र रहिये। इस लिये कि येह जान राहे ख़ुदा में क़ुरबान करना ही हमारा अस्ल मुद्दआ है लिहाज़ा हमारी ता'दाद की कमी और दुश्मनों की कसरत हरगिज़ हमारे दिलों से जज़्बए जिहाद कम नहीं कर सकती। (فتوح الشام، النجدة، الجزء: ٢، ص ٨)

सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद का अ़ज़ीमुश्शान ख़ुत़्बा

रूमियों के साथ होने वाली जंग में मुसल्मानों के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, रूमियों की ता'दाद मुसल्मानों के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा थी जिन्हें देख कर मुसल्मानों के ह़ौसले पस्त होने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसल्मानों के लश्कर में जोशो जज़्बे को बढ़ाने के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर ह़ाज़िरी से डरो और पीठ फैरने से बचो वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर जहन्नम की आग वाजिब कर देगा, ऐ ह़ामिलीने क़ुरआन ! ऐ अहले ईमान ! सब्र करो।" आप का येह ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाना था कि इस्लामी लश्कर में एक ह़ैरत

www.dawateislami.net

अंगेज़ जोश और वल्वला पैदा हो गया और मुसल्मान इस जोशो जज़्बे के साथ लड़े कि रूमियों के क़दम उखड़ गए, तीन हज़ार रूमी मौत के घाट उतर गए और मुसल्मानों को शानदार फ़त्ह नसीब हुई। (فتوح الشام، نصیحۃ خالد، الجزء: ۱، ص۵۵)

हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رضی اللہ تعالٰی عنہا की वसिय्यत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने वसिय्यत की थी कि इन का जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ पढ़ाएं, लेकिन जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का इन्तिक़ाल हुवा तो जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने पढ़ाया क्यूं कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہا ने येह वसिय्यत उस वक़्त फ़रमाई थी जब आप बीमार थीं बा'द में आप सिह़्ह़त याब हो गईं लेकिन हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ का इन्तिक़ाल आप से पहले ही हो गया। (الاصابۃ، کتاب النساء، ام سلمۃ بنت ابی امیۃ، ج۸، ص۴۰۷)

आप की अज़्वाज

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की अज़्वाज में सब से मशहूर हज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब हैं जो कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ की बहन हैं। आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक और ज़ौजा का ज़िक्र भी मिलता है जिन का नाम ज़ैनब बिन्ते सुवैद बिन सामित अन्सारिया है इन से आप की बेटी आ़तिका पैदा हुई।

(الاصابۃ، کتاب النساء، زینب بنت سوید، ج۸، ص۱۲۰، الاستیعاب، باب النساء وکناھن، ج۴ص۴۴۷)

आप की औलाद

आप की औलाद की ता'दाद 31 है जिन में से तेरह बेटे और अठ्ठारह बेटियां हैं।

बेटों के नाम येह हैं : अ़ब्दुल्लाह अक्बर, **अ़ब्दुल्लाह** असग़र, अ़ब्दुर्रह़मान अक्बर, अब्दुर्रह़मान असग़र, इब्राहीम अक्बर, इब्राहीम असग़र, अ़म्र अक्बर, अ़म्र असग़र, अस्वद, त़ल्ह़ा, मुह़म्मद, ख़ालिद और ज़ैद।

बेटियों के नाम येह हैं : उम्मे ह़सन कुब्रा, उम्मे ह़सन सुग़रा, उम्मे ह़बीब कुब्रा, उम्मे ह़बीब सुग़रा, उम्मे ज़ैद कुब्रा, उम्मे ज़ैद सुग़रा, आ़इशा, आ़तिका, ह़फ़्सा, ज़ैनब, उम्मे स-लमा, उम्मे मूसा, उम्मे सईद, उम्मे नो'मान, उम्मे ख़ालिद, उम्मे सालेह़, उम्मे अ़ब्दुल ह़ौला और ज़ल्ला। (صفۃ الصفوۃ، ابوالاعور سعید بن زید، ج۱، ص۱۹۰)

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی अ़ल्लामा बैहक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی के ह़वाले से फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बेटी अस्मा बिन्ते सईद भी हैं। (تقریب التھذیب، باب النساء، ج۱، ص۱۳۴۳)

www.dawateislami.net

रिवायते ह़दीस

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अड़तालीस अह़ादीस रिवायत की हैं, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़रीस और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم वग़ैरा और ताबिई़न में से एक जमाअ़त ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अह़ादीस रिवायत की हैं।

(سیر اعلام النبلاء، سعید بن زید، الرقم: ۱۱، ج ۳، ص ۷۸، تهذیب الاسماء واللغات للنووی، سعید بن زید، ج ۱، ص ۲۱۱)

आप से मरवी चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) सिलए रेह़्मी करना

"रेह़्म (या'नी सिलए रेह़्मी करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिफ़ाती नाम) **रह़मान** से बना है पस जो इस को तोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देगा।" (البحر الزخار، الحدیث: ۱۲۶۵، ج ۴، ص ۹۳)

(2) सूद से भी बड़ा गुनाह

"नाह़क़ किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना सूद से भी बड़ा गुनाह है।" (سنن ابو داود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، الحدیث: ۴۸۷۶، ج ۴، ص ۳۵۳)

www.dawateislami.net

(3) खुम्बी के पानी में शिफ़ा है

"खुम्बी मन्न से है और इस के पानी में आंखों के लिये शिफ़ा है । (صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ تعالی: وظللنا علیکم الغمام، الحدیث: ۴۴۷۸، ج۳، ص۱۲۶)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बरसात में भीगी लकड़ी से छतरी की त़रह़ एक घास उग जाती है जिसे उर्दू में खुम्बी और चत्रमार कहते हैं। इस की दो क़िस्में हैं : एक छतरी नुमा और एक मूली की त़रह़ लम्बी, यहां दूसरी क़िस्म मुराद है। बा'ज़ लोग इस की जड़ें पका कर खाते हैं। बरसात में उ़मूमन मिल जाती है। मन्न ब मा'ना मन्नत और ने'मत है। इस से मुराद या तो बनी इसराईल पर उतरने वाला मन्न ही है जो कुछ फ़र्क़ के साथ अब इस शक्ल में है या इस से मुराद येह है कि जैसे बनी इसराईल पर मन्न आ'ला द-रजे की चीज़ उतरी मगर बिग़ैर मेहनतो मशक़्क़त उन्हें दे दी गई ऐसे ही येह भी है। इस का अ़रक़ आंख की बा'ज़ बीमारियों में मुफ़ीद है और बा'ज़ में नुक़्सान देह है, लिहाज़ा इस का इस्ति'माल त़बीब की राय से करना चाहिये। येह ही ह़ाल तमाम अह़ादीस की दवाओं का है कि तमाम दवाएं बरह़क़ हैं मगर हम इन का इस्ति'माल त़बीब की राय से करें।"

(مرآۃ المناجیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الاول، ج۶، ص۲۰-۲۷، کتاب الطب والرقی، الفصل الثالث، ص ۲۴۹-۲۵۰ ملخصا)

चार त़रह़ के शहीद

"(1) जो आदमी अपने माल की ह़िफ़ाज़त करते हुए मारा

www.dawateislami.net

जाए वोह शहीद है। (2) और जो अपने दीन की ह़िफ़ाज़त करते हुए मारा जाए वोह भी शहीद है। (3) जो अपनी जान की ह़िफ़ाज़त करते हुए मारा जाए वोह भी शहीद है। (4) नीज़ जो अपने अहलो इयाल की ह़िफ़ाज़त करते हुए मारा जाए वोह भी शहीद है।''

(سنن الترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فی من قتل۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۴۲۶، ج۳، ص ۱۱۲)

(5) ह़दीस घड़ने का वबाल

''मुझ पर झूट बांधना आ़म लोगों पर झूट बांधने की त़रह़ नहीं याद रखो बेशक जो मुझ पर झूट बांधे वोह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले।'' (مسند ابی یعلی، مسند سعید بن زید، الحدیث: ۹۶۲، ج ۱، ص ۴۱۴)

(6) औ़रतों का फ़ितना

''मेरे बा'द उम्मत में मर्दों के लिये सब से नुक़्सान देह औ़रतों का फ़ितना है।''

(صحیح مسلم، کتاب الرقاق، باب اکثر اھل الجنۃ الفقراء، الحدیث: ۲۷۴۱، ص ۱۴۶۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे आख़िरत

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह जलीलुल क़द्र सह़ाबी जब से इस्लाम लाए शबो रोज़ दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये मसरूफ़े अ़मल रहे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम इस्लामी जंगों में ह़िस्सा लिया और शौक़े

www.dawateislami.net

शहादत से मा'मूर हो कर जिहाद करते रहे। सत्तर से ज़ाइद बरस की उ़म्र में 50 या 51 सिने हिजरी मदीना शरीफ़ से तक़रीबन दस मील दूर मक़ामे अ़क़ीक़ में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने विसाल फ़रमाया, वहां से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का ज-सदे अत़्हर मदीनए मुनव्वरह लाया गया।

ग़ुस्ल व नमाज़े जनाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप को ग़ुस्ल दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इन ही दोनों जलीलुल क़द्र सह़ाबियों ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को क़ब्र में उतारा। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का मज़ारे पुर अन्वार जन्नतुल बक़ीअ़ में है।
(الطبقات الکبری ، سعید بن زید ، ج۳، ص۲۹۳ ، معرفۃ الصحابۃ ، معرفۃ سعید بن زید، ج ۱، ص ۱۵۴، ۱۵۵)

सब सह़ाबा से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे रसूल
नज्म हैं और नाउ है इ़तरत रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी)
शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत
23 जुमादल ऊला 1433 हि. ब मुत़ाबिक़ 16 एप्रिल 2012 ई.

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب کا نام	مصنف/مؤلف	مطبوعات
1	القرآن الكريم	کلام الٰہی	مکتبۃ المدینہ کراچی
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
3	صحيح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الكتب العلمية بيروت
4	صحيح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
5	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
6	سنن ابو داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ	دار احياء التراث العربی بیروت
7	مسند امام احمد	ابو عبد الله احمد بن حنبل الشيباني متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
8	السنن الکبری	ابو بكر احمد بن الحسين بن علي بيهقي متوفی ۴۵۸ھ	دار الكتب العلمية بيروت
9	البحر الزخار	امام ابو بکر احمد بن عمرو بصری متوفی ۲۹۲ھ	مكتبة العلوم والحكم مدینہ منورہ
10	مسند ابی یعلی	ابو يعلى احمد بن علي بن مثنى موصلي متوفی ۳۰۷ھ	دار الكتب العلمية بيروت
11	جمع الجوامع	امام عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت
12	تاريخ الخلفاء	امام عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
13	السيرة النبوية	عبد الملک بن ھشام بن ایوب متوفی ۲۱۳ھ	دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

14	تاریخ مدینة دمشق	امام ابو القاسم علي بن حسن متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت
15	الریاض النضرة	امام محب الدین احمد بن عبد اللہ طبری متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمية بیروت
16	الاصابة فی تمییز الصحابة	امام احمد بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمية بیروت
17	الطبقات الکبری	علامة محمد بن سعد بن منیع ہاشمی متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمية بیروت
18	اسد الغابة	علامة علی بن محمد بن الاثیر جزری متوفی ۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
19	تهذیب الاسماء واللغات	امام ابو زکریا محیي الدین بن شرف نووي متوفی ۶۷۶ھ	دار الفکر بیروت
20	معرفة الصحابة	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمية بیروت
21	فتوح الشام	ابو عبد اللہ محمد بن عمر واقدی متوفی ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمية بیروت
22	الاستیعاب	علامہ محمد ابن عبد البر متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمية بیروت
23	صفة الصفوة	امام ابو الفرج جمال الدین ابن جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمية بیروت
24	تقریب التهذیب	امام احمد بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار العاصمہ عرب
25	سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذهبی متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت
26	سیرت سید الانبیاء	مولانا محمد ہاشم ٹھٹھوی متوفی ۱۱۷۴ھ	مکتبہ مظہر علم لاہور
27	مرآة المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

नम्बर	मौज़ूआत	सफ़ह़ा
1	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1
2	मग़्फ़िरतों भरा इज्तिमाअ़	1
3	इस्तिक़ामत का पहाड़	2
4	इस्तिक़ामत का मुज़ा–हरा करने वाला येह जवान कौन था ?	7
5	सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद का नाम व नसब	8
6	सिल्सिलए नसब में हुज़ूर से इत्तिसाल	8
7	वालिदए मोह़–त–रमा का तआ़रुफ़	9
8	वालिदे गिरामी का तआ़रुफ़	9
9	मिल्लते इब्राहीमी के पैरौकार	9
10	ए'लाए ह़क़ का जज़्बा	11
11	आप अकेले पूरी उम्मत हैं	12
12	इस्लाम की जानिब मैलान का बुन्यादी सबब	12
13	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنہ से क़राबत दारी	13
14	आप का हुल्यए मुबा–रका	13
15	ह़क़ीक़ी सआ़दत व ख़ुश बख़्ती	13
16	मुब्तदी मुसल्मान	14
17	मुहाजिरे अव्वल	14
18	रिश्तए मुवाख़ात	15

www.dawateislami.net

19	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़बूले इस्लाम	15
20	आप की ख़ुश बख़्ती	16
21	बैअ़ते रिज़्वान का शरफ़	16
22	जहन्नम से आज़ादी की बिशारत	17
23	जन्नती होने की बिशारत	17
24	आप के रफ़ीक़े जन्नत	18
25	आप की गुस्ताख़ी का अन्जाम	19
26	**अल्लाह** के बरगुज़ीदा बन्दों से मह़ब्बत या नफ़रत	21
27	मक़ामे सह़ाबी ब ज़बाने सह़ाबी	21
28	आप की दुन्या से बे रग़बती और मैलाने आख़िरत	22
29	हुक्मरानी के बा वुजूद तक़्वा बर क़रार	23
30	सईद बिन ज़ैद, ह़ाकिमे दिमश्क़	24
31	ए'लाए कलि-मतुल ह़क़ का अ़ज़ीम जज़्बा	24
32	आप का शौक़े जिहाद	26
33	बद्री सह़ाबी	26
34	शाम की फ़ुतूह़ात में आप का किरदार	27
35	अमीनुल उम्मत का मक्तूब	27
36	मुसल्मानों की जंगी ह़िक्मते अ़-मली	28
37	पहाड़ का मुह़ा-सरा	29
38	सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद की आ'ला फ़ह्मो फ़िरासत	31
39	ग़ैरुल्लाह को सज्दा करने से मन्अ़ कर दिया गया	31

www.dawateislami.net

40	सज्दए शुक्र की अदाएगी	32
41	सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद को फ़त्ह़ की मुबारक बाद	33
42	शहादत है मत़्लूबो मक्सूदे मोमिन	35
43	सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद का अ़ज़ीमुश्शान ख़ुत़्बा	36
44	ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رضی اللہ تعالیٰ عنہا की वसिय्यत	37
45	आप की अज़्वाज	37
46	आप की औलाद	38
47	रिवायते ह़दीस	39
48	आप से मरवी चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم	39
49	(1) सिलए रेह़्मी करना	39
50	(2) सूद से भी बड़ा गुनाह	39
51	(3) "खुम्बी" के पानी में शिफ़ा है	40
52	(4) चार त़रह़ के शहीद	40
53	(5) ह़दीस घड़ने का वबाल	41
54	(6) औ़रतों का फ़ितना	41
55	सफ़रे आख़िरत	41
56	गुस्ल व नमाज़े जनाज़ा	42
57	मआख़िज़ो मराजेअ़	41

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net